उत्तरांचल दीप संपादकीय

इच्छाशक्ति पर सवाल

देशवासियों को सबसे अधिक अफसोस इस बात का है कि केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह आतंकवादी हमले और सीज फायर का उल्लंघन होने पर मुंहतोड़ जवाब का जुमला दोहराते हैं। लोग तो अब यह कह रहे हैं कि राजनाथ सिंह सिर्फ मुंह से बोल रहे हैं और पाकिस्तान हकीकत में मुंहतोड़ जवाब दे रहा है।

तीन बार युद्ध में मात देने वाले भारत पर अब पाकिस्तान लगातार हमले कर रहा है और केन्द्र सरकार बयानबाजी से ज्यादा कुछ करके नहीं दिखा रही है। कश्मीर घाटी में आतंकी हमले अक्सर होते रहते हैं। जबकि जम्मू का क्षेत्र सुरक्षित माना जाता है। लेकिन आतंकवादियों ने जम्मू के सुंजवां आर्मी कैंप पर हमला करके पांच जवानों को शहीद कर दिया। दो दिन तक चले ऑपरेशन के बाद सेना ने चार आतंकवादियों को मार गिराया। इस दौरान कैंप में सेना के परिवारों के 150 क्वार्टर खाली कराये गये। अन्यथा आतंकवादी बहुत लोगों को जान से मार सकते थे। सेना के कैंप में ऑपरेशन खत्म होते ही श्रीनगर में आतंकवादियों ने सीआरपीएफ के कैंप पर हमला कर दिया। एक जवान यहां भी शहीद हो गया। सीमा पर पाकिस्तानी सेना युद्ध विराम का उल्लंघन कर गोलीबारी करके भारतीय जवानों को शहीद कर रही है। उधर पाकिस्तान से आये आतंकवादियों के हौसले अब इतने बुलंद हो गये हैं कि वह सुरक्षा बलों के कैंप पर ही हमला बोल रहे हैं। उरी में कैंप में सो रहे 18 जवानों को आतंकवादियों ने शहीद कर दिया था। उस समय इसे कायराना हरकत कह कर सरकार ने बचाव कर लिया था। लेकिन अब तो सुरक्षा बलों के कैंप पर हमलों का सिलसिला ही शुरू हो गया है। भारत के सवा सौ करोड़ देशवासी अब केन्द्र सरकार से पूछ रहे हैं कि कब तक और कितने जवान शहीद होते रहेंगे। भारत ने सन 1965 में पाकिस्तान को युद्ध में मात देकर उसकी काफी जमीन पर कब्जा कर लिया था। सोवियत संघ के ताशकंद में लालबहादुर शास्त्री के साथ समझौता करके पाकिस्तान को जमीन वापस कर दी गई थी। इसके बाद सन 1971 में भारत से फिर युद्ध हुआ और भारत ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करते हुए तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान को नया राष्ट्र बांग्लादेश बना दिया। उस समय पाकिस्तान के 90 हजार सैनिकों को युद्धबंदी बना लिया था। 1972 में तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो और इंदिरा गांधी के बीच शिमला में समझौता हुआ और भारत ने युद्धबंदी पाकिस्तान को सौंप दिये। दो युद्धों में हारने के बाद पाकिस्तान ने कारगिल में बंकर बनाकर भारत को एक बार फिर ललकारा तो भारत ने कारगिल में पाकिस्तान को मात दी। उस समय भारत के जवान ज्यादा संख्या में शहीद हुए थे। लेकिन अब तो पाकिस्तान ने छद्म युद्ध छेड़ रखा है। भारत को लगातार नुकसान उठाना पड़ रहा है। लेकिन भारत सरकार में युद्ध का मोर्चा खोलने की इच्छा शक्ति की कमी नजर आ रही है। वर्तमान में केन्द्र में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार है। इंदिरा गांधी के बाद नरेन्द्र मोदी को सबसे अधिक शक्तिशाली, लोकप्रिय और जनाधार वाला नेता माना जा रहा है। फिर भी केन्द्र सरकार निर्णय नहीं ले रही है। देशवासियों को सबसे अधिक अफसोस इस बात का है कि केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह आतंकवादी हमले और सीज फायर का उल्लंघन होने पर मुंहतोड़ जवाब का जुमला दोहराते हैं। लोग तो अब यह कह रहे हैं कि राजनाथ सिंह सिर्फ मुंह से बोल रहे हैं और पाकिस्तान हकीकत में मुंहतोड़ जवाब दे रहा है।

विचित्र होती है 'बुगमैन' की जीवन शैली

दक्षिण अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में निवास करते हैं यह मनुष्य

दक्षिण अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में निवास करने वाले 'बुगमैन' ऐसी ही एक जाति है जो प्रकृति के कठोर वातावरण के साथ सदियों से अपना सामंजस्य बनाये हुए है। 'बुगमैन' जाति के लोग कालाहारी मरूस्थल के 'वासूनोलैंड', नेहाल व दक्षिण रोडेशिया में पाये जाते हैं। हब्शी प्रजाति के बुगमैन जाति के लोग बड़े ही निराले होते हैं।

प्रकृति की लीला निराली होती है। प्रकृति ने जहां अनेक प्रवृत्तियों के जन्तुओं की रचना की, वहीं मानव को भी कई रूप व प्रवृत्तियां प्रदान की हैं। यह मानव की उत्कट जीवन क्षमता ही है कि वह प्रकृति की क्रूरतम दशाओं को भी अपने अनुकूल बना लेता है। जहां जीवन के आधारभूत तत्व का अभाव हो जाता है, वहीं वह पनप भी जाता है। दिन की प्रचंड गर्मी और रात्रि में अत्यधिक ठंड जैसे जटिल जलवायु वाले मरूस्थलीय प्रदेश में ऐसी ही कुछ आदिम मानव जातियां सदियों से रहती आ रही हैं। दक्षिण अफ्रीका के कालाहारी मरूस्थल में निवास करने वाले 'बुगमैन' ऐसी ही एक जाति है जो प्रकृति के कठोर वातावरण के साथ सदियों से अपना सामंजस्य बनाये हुए है। 'बुगमैन' जाति के लोग कालाहारी मरूस्थल के 'वासूनोलैंड', नेहाल व दक्षिण रोडेशिया में पाये जाते हैं। हब्शी प्रजाति के बुगमैन जाति के लोग बड़े ही निराले होते हैं। इसके न तो जबड़े ही आगे निकले होते हैं और न ही होंठ बाहर की ओर उल्टे होते हैं। इनकी आंखें चौड़ी तथा त्वचा काली होती है। उच्च तापमान के कारण ये लोग प्रायः नग्न ही रहते हैं। बुगमैन जाति के पुरुष कमर में खाल का एक टुकड़ा बांधते हैं जो पैरों के मध्य से होकर आगे को बांध दिया जाता है। स्त्रियां दो खाल के टुकड़े पहनती हैं जो कमर से घुटने तक आगे-पीछे लटकते रहते हैं। पैरों में खाल या छाल के चप्पल पहनते हैं तथा सिर से लेकर कमर तक का शेष भाग नंगा ही रहता है। बुगमैन धूप, ठंड एवं वर्षा से बचने के लिए गुफाओं, कम गहरे भूछिद्रों तथा झोपड़ियों में रहते हैं। कभी-कभी लकड़ियों की गुम्बदाकार झोपड़ियों को पत्ते व खाल से ढंककर उन्हीं में निवास करते हैं। इनके भोजन में आखेट से प्रायः मांस, मछली, वृक्षों की जड़ें, शहद व छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े, सांप, अण्डे व छिपकली होते हैं। वहां पर एक प्रकार का दीमक जिसे 'बुगमैन का चावल' कहा जाता है, काफी मात्रा में पाया जाता है जो इनके भोजन का मुख्य अंग होता है। इनकी शादी की प्रथा को 'बर्बरी' कहा जाता है। स्त्री एवं पुरुष में खुला यौन संबंध स्थापित होता रहता है। जब कोई स्त्री गर्भवती हो जाती है तो उस स्त्री के बालों में 'सुर्रमर्दक' नामक एक वनस्पति का रस डाला जाता है तथा उसका स्नान निषेध कर दिया जाता है। गर्भकाल से प्रसव काल तक की अवधि में 'सुर्रमर्दक' के प्रभाव से उसके सिरे में असंख्य जूं हो जाती हैं। शरीर के कपड़ों में भी चीलरों की संख्या असंख्य हो जाती हैं। इस परीक्षा में गुजरकर जब बुगमैन औरत सन्तान को जन्म देती है, उस समय समुदाय को 'नेहाल' (भोज) दिया जाता है, जिसे 'बेपर जाम' कहा जाता है। इस भोज से पूर्व उसे स्त्री के सिर और कपड़ों से चुन-चुनकर जूं और चीलरों को निकाला जाता हैं। उस जूं और चिलरों को वे स्वाद ले-लेकर खाते हैं। भोजन के अभाव की स्थिति में भी वे अपने शरीर की जुओं को निकाल-निकालकर खाते रहते हैं। इनकी समझ में वह पौष्टिक भोजन होता हैं। जंतुओं को फंदे में फंसा कर मारने में वे बड़े दक्ष होते हैं। पुरुष लोग शिकार मारकर लाते हैं और परिवार के सभी व्यक्ति मिलकर उसे कच्चे ही खाते हैं। जब कोई जन्तु किसी पानी के छिद्र के या ताल के किनारे जल पीने आता है, तो बुगमैन छिपकर तीर कमान से उसका आखेट करते हैं। जंतुओं की बोली की नकल करने में वे बड़े दक्ष होते हैं। बड़े जंतुओं का शिकार उसे घेरकर व कीचड़ में घंसाकर, लाठियों से प्रहार करके आसानी से कर लेते हैं। जिस दिन उस समाज में किसी बड़े जन्तु का शिकार किया जाता है, उस दिन समुदाय की सभी स्त्रियां 'भटकोई' एक प्रकार का नशीला पेय पीकर नाचती हैं। मदोन्मत्त होने के बाद उस शिकार का मांस सब मिलकर खाते हैं और आनंद मनाते हैं। जब बहुत-सा शिकार मिल जाता है तो कई दिनों तक इस प्रकार की दावतें मनती रहती हैं। भविष्य के लिए भोजन संचित कर रखने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। जब शिकार नहीं मिलता तो वे महीनों अल्पाहार में ही गुजारते हैं। अपने शरीर की जुओं तक को खाने वाले इन लोगों का खान-पान बहुत गंदा होता है। सड़े-गले भोजन भी ये बड़े चाव से खा लेते हैं। ये लोग भूत, प्रेतों, जादू-टोनों में काफी विश्वास करते हैं। जादू-टोने का प्रयोग शिकार में सफलता प्राप्त करने के लिए होता है। धीमे चलने वाले जंतु का मांस खाने के लिए वे उसे घायल कर उसका पीछा करते हैं। जिस जंतु का शिकार वे करना चाहते हैं, उसी जाति के मांस की राख को मुख या शरीर पर लगाकर शिकारी-शिकार पर निकालता है। इनके शस्त्र या औजारों में तीर कमान, फेंककर मारने वाली लाठियां, चाकू, बर्छियां और भूमि खोदने की लकड़ियां होती हैं। इनके धनुष की लम्बाई एक मीटर होती है। तीर के फलक पर विषाक्त द्रव लगाकर चलाया जाता है। इनके तीर साठ मीटर की दूरी तक मार कर सकते हैं। बुगमैन लोगों की समाज व्यवस्था जाति साधारण व आदिमकालीन है। एक वर्ग में प्रायः 15 से 20 व्यक्ति होते हैं जो परस्पर संबंधित होते हैं। शुष्ककाल में अल्प समय के लिए एक वर्ग में कुछ अधिक व्यक्ति सम्मिलित हो जाते हैं परन्तु प्रत्येक परिवार अपना डेरा अलग-अलग बनाता है। इनमें मुखिया प्रणाली नहीं पायी जाती।

आनंद कुमार अनंत

विविधा

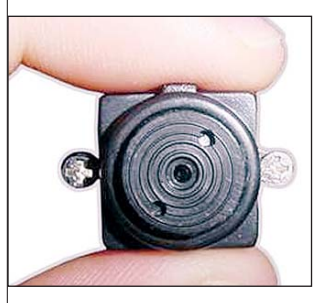

बाथरूम, यूरिनल, ड्रेसिंगरूम, चेंजिंग रूम, अस्पताल एवं शापिंग मालों में भी ऐसा किया जा रहा है। जीवन में कभी भी लापरवाही बरतेंगे तो ऐसे स्पाई कैमरे आप पर मुसीबत लाने का मुकम्मल इंतजाम कर देंगे।

स्पाई कैमरों का दुरुपयोग बढ़ रहा है, ऐसे जासूसी कैमरों की शिकार लड़कियां एवं महिलाएं हो रही हैं। स्पाई कैमरों की व्यापकता एवं विविधता ने नारी जाति पर खतरे को और बढ़ा दिया है। घर से बाहर हर जगह ऐसे कैमरों के माध्यम से लड़कियों एवं महिलाओं के निजी अंगों की ताक-झांक की जा रही है तथा तस्वीर ली जा रही है। बाथरूम, यूरिनल, ड्रेसिंगरूम, चेंजिंग रूम, अस्पताल एवं शापिंग मालों में भी ऐसा किया जा रहा है। जीवन में कभी भी लापरवाही बरतेंगे तो ऐसे स्पाई कैमरे आप पर मुसीबत लाने का मुकम्मल इंतजाम कर देंगे। ध्यान रखें किसी अजनबी के साथ फोटो खिंचवाना भी आप पर भारी पड़ सकता है। विज्ञान में हर खोज एवं आविष्कार अच्छे उद्देश्य को लेकर किया जाता है। ऐसे खोज एवं आविष्कार को मनुष्य के लिए वरदान कहा जाता है। उसे भलाई के काम में उपयोग में लाया जाता है किंतु आज विज्ञान के हर खोज एवं आविष्कार का उपयोग विनाश के लिए किया जा रहा है। ऐसी चीजों का दुनिया भर में दुरुपयोग बढ़ गया है। कैमरे को भी विज्ञान की वरदानी वस्तु मानकर उपयोग होता रहा है। बड़े आकार का कैमरा लगातार छोटा रूप लेता गया जो आज बेल्ट-बक्कल, घड़ी, पेन, कमीज के बटन, चश्मा, ताले, दरवाजे के हैंडल, बिजली के बटन आदि में समा गया है। जो कैमरा जासूसी के काम में उपयोग में लाया जाता है उसी को विविध रूप व आकार दे दिए गए हैं। इसी जासूसी के कैमरों या स्पाई कैमरे का उपयोग अब बहुत ज्यादा बढ़ गया है। इन स्पाई कैमरों के माध्यम से निजी अंगों एवं निजी पलों में ताक झांक बढ़ गई है। इनसे तस्वीर लेकर उसका दुरुपयोग एवं दोहन बढ़ गया है।

कार्यक्रम/ छात्र-छात्राओं ने ली खेल भावना की शपथ

पंतनगर विवि में खेलकूद प्रतियोगिता का आगाज

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

पंतनगर। पंतनगर विश्वविद्यालय में 52वीं वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता स्टीवेंसन स्टेडियम में प्रारम्भ हुई। कुलपति प्रो. ए.के. मिश्रा ने प्रतियोगिता का ध्वज फहराया व मार्चपास्ट की सलामी ली। मार्चपास्ट की अगुवाई पी.ए.सी. के बैण्ड ने की जिसके पीछे सभी छात्रावासों के विद्यार्थी अपने-अपने छात्रावास का ध्वज लेकर मार्चपास्ट कर रहे थे।

इस अवसर पर छात्र व छात्राओं के कैप्टन क्रमशः हर्षित अजेन्द्र व महिमा जोशी ने विद्यार्थियों को खेल भावना की शपथ दिलायी तथा प्रतियोगिता के प्रारम्भ में मशाल लेकर स्टेडियम के मैदान की परिक्रमा की। कुलपति ने गुब्बारे उड़ाकर प्रतियोगिता की शुरूआत की। उन्होंने प्रतियोगिता की स्मारिका का विमोचन किया। इस अवसर पर छात्राओं ने गीत व नृत्य कार्यक्रमों की आकर्षक प्रस्तुति दी।

छात्रावासों के मार्चपास्ट में महिला छात्रावासों में कस्तूरबा भवन प्रथम तथा सरोजिनी भवन व यमुनोत्री भवन संयुक्त रूप से द्वितीय वहीं मंदाकिनी भवन छात्रावास तृतीय स्थान पर रहे। पुरुष छात्रावासों में नेहरू भवन प्रथम, पंत भवन द्वितीय तथा चितरंजन भवन तृतीय स्थान पर रहे। इधर पुरुषों की 800 मीटर दौड़ में आलोक सिंह, प्रथम, रवि राणा, द्वितीय तथा प्रशांत मेहरा तृतीय स्थान पर रहे। वहीं महिलाओं में लता पाण्डे प्रथम, रोशनी चन्द द्वितीय एवं सिमरन चन्द तृतीय रहीं।

वहीं पुरुषों एवं महिलाओं की गोला फेंक, लम्बी कूद, चक्का फेंक, ऊंची कूद तथा पुरुषों की 5000 मीटर दौड़ एवं पुरुषों की 4गुणा 400 मीटर रिले दौड़, पुरुष एवं महिलाओं की 100 मीटर दौड़, 400 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़ तथा पुरुषों की 110 मीटर एवं महिलाओं की 100 मीटर बाधा दौड़ की प्रारम्भिक (हीट) प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुई। इनकी फाइनल प्रतियोगितायें व अन्य प्रतियोगितायें कल आयोजित होंगी। उद्घाटन के अवसर पर अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण डा. आर.एस. जादौन, आयोजन सचिव डा. जी.एस. बोहरा व सभी अधिष्ठाता, निदेशक छात्रावास अभिरक्षक व सहायक छात्रावास अभिरक्षक, स्टाफ काउन्सलर व अधिकारीगण तथा विद्यार्थी मौजूद थे।

झपटामार मोबाइल लूटने वाला गिरोह सक्रिय

एक युवक से बाइक सवार दो युवकों ने मोबाइल लूटा

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

गदरपुर। नगर में अब मोबाइल छीनकर भागने वाला गिरोह भी सक्रिय हो गया है। गूलरभोज रोड पर बाइक पर सवार दो युवकों ने एक युवक को झपटा मारकर मोबाइल छीनकर ले गये। जब तक युवक कुछ समझ पाता तब तक बाइक पर सवार युवक चम्पत हो गये। युवक ने घटना की सूचना थाने में दी लेकिन जब तक पुलिस मौके पर पहुंचती तब तक झपटामार युवक फरार हो चुके थे।

गूलरभोज रोड स्थित अंचित सुखीजा बाजार से अपने घर आ रहा था और उसके हाथ में मोबाइल था। जब वह गूलरभोज रोड स्थित टंकी के पास पहुंचा तो पीछे से बाइक पर सवार दो युवकों ने अंचित के हाथ पर झपटा मारते हुए मोबाइल छीन लिया और वे तेजाफौजा की तरफ फरार हो गये। इधर कुछ दुकानदारों ने चोरों का पीछा किया लेकिन कुछ नहीं पता चला। इसके बाद अंचित कुछ व्यापारियों के साथ थाने पहुंचे और घटना की जानकारी दी। अंचित ने बताया कि उसके मोबाइल की कीमत करीब 11 हजार रुपये थी। अंचित का कहना था कि बाइक पर सवार 18 से 22 वर्ष तक के युवक थे। इस घटना को लेकर व्यापारियों में रोष व्याप्त है। यहां बता दें कि एक सप्ताह पूर्व इसी मार्ग पर आवास विकास कालोनी निवासी एक युवती से भी इस तरह मोबाइल छीनने की घटना हुई थी। वहीं रेडरोज पब्लिक स्कूल के पास से एक युवक की चैन छिनने की घटना हो चुकी है। पुलिस इन घटनाओं को गंभीरता से नहीं ले रही है जिससे चोरों के हौंसले बुलंद है। उधर पुलिस का कहना है कि मोबाइल छीनने वालों की खोजबीन की जा रही है जिसका शीघ्र खुलासा कर दिया जायेगा।

न्यूज Flash

चिकित्सा शिविर में 210 मरीजों का परीक्षण

किच्छा। लाइफ केयर नर्सिंग होम में एक दिवसीय विशाल चिकित्सा शिविर का शुभारंभ क्षेत्रीय विधायक राजेश शुक्ला ने विधिवत फीता काटकर किया। इस अवसर पर त्वचा रोग विशेषज्ञ डा. मंयक गुप्ता तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. मनीषा गुप्ता व डा. राजेश चौहान ने मरीजों का परीक्षण किया। शिविर में त्वचा रोग से संबंधित मरीजों का इजाज किया। वहीं स्त्री व प्रसूति रोग विशेषज्ञा डा. मनीषा गुप्ता ने महिलाओं की बीमारियों का परीक्षण किया और उन्हें परामर्श दिया। शिविर में करीब 210 मरीजों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर उन्हें दवा वितरित की। वहीं हेपेटाइटिस बी व सी की भी निःशुल्क जांच कर इसक रोकथाम के टिप्स बताये। नर्सिंग होम के एमडी डा. मंयक गुप्ता ने बताया कि चिकित्सालय लोगों को उच्च चिकित्सा का फायदा पहुंचाने के लिए शिविर का आयोजन करते आ रहे हैं। उधर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक शुक्ला ने शिविर लगाने के लिए आयोजकों की सराहना की। वहां डा. मनीषा गुप्ता, कुन्दन लाल खुराना, डा. राजेन्द्र कामरा, फात्मा अहमद, दलीप बिष्ट, शीशपाल राणा, ममता राय, उर्मिला पाल, आईशा बानो, सानू, आशा देवी, सादाब खान, उर्मिला देवी, तबस्सुम बेगम, राजेन्द्र सिंह, अक्षय पाल, उमेश पाल, बीना देवी, बिलासो देवी, गुरविन्दर सिंह आदि मौजूद थे।

चौकी में बंद आरोपियों में एक की हालत बिगड़ी

रुद्रपुर। बाजार पुलिस की हिरासत में बंद आरोपियों में एक की अचानक हालत बिगड़ गई और बेहोश हो गया। उसकी हालत बिगड़ते देख पुलिस कर्मियों के हाथ पैर फूल गये। आनन फानन में पुलिस कर्मियों ने उसे बड़ी मुश्किल में होश लाये। जानकारी के अनुसार बाजार पुलिस ने पूछताछ को कई युवकों को हिरासत में लेकर एक कमरे में बंद कर रखा है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक शुक्रवार को दोपहर का कमरे में बंद आरोपियों में एक की हालत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गया। उसकी हालत बिगड़ने पर अंदर बंद अन्य आरोपियों ने अंदर से दरवाजा खटखटाना शुरु कर दिया। कमरा खोलने पर एक आरोपी बेहोश पड़ा देख पुलिस कर्मियों के हाथ पैर फूल गये। उसे आनन फानन में होश में लाया गया। घटना के दौरान चौकी प्रभारी आदर्श कालोनी भी थे। मामला चौकी बाजार क्षेत्र का होने के कारण बाजार पुलिस कर्मी बुलाये गये। उधर चौकी प्रभारी जसविन्दर सिंह ने जानकारी चाही तो उन्होंने पूछताछ को हिरासत में लेने की बात ही। बताया कि नशे के आदी है। इसी लिये एक को चक्कर आ गये।

पुलिस ने सिटी क्लब से संदिग्ध दबोचा, पूछताछ

रुद्रपुर। काशीपुर बाई पास रोड सिटी क्लब में संदिग्ध घूम रहे युवक को सिटी क्लब के कर्मियों की मदद से दबोव लिया। पुलिस उससे पूछताछ कर रही। जानकारी के मुताबिक पिछले कई दिनों से सिटी क्लब में शादी के कार्यक्रम हो रहे हैं और इस बीच वहां से सामान चुराने की घटनाएं भी हो रही हैं। पुलिस ने गत दिवस भी कर्मियों की मदद से एक चोर को पकड़ लिया था। इधर शुक्रवार दोपहर को भी क्लब के कर्मियों ने पुलिस को सूचना दी कि एक युवक संदिग्ध घूम रहा है। आशंका जताई कि वह चोरी करने के प्रयास में है। सूचना पर चौकी प्रभारी ओमप्रकाश ने पुलिस कर्मियों को क्लब में भेजा और पुलिस ने युवक को पकड़ लिया। चौकी में उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस के मुताबिक आरोपी के पास से कुछ नशे की दवाएं बरामद हुई है। युवक नशेड़ी लग रहा है।

महिला सशक्तिकरण के बिना समाज का विकास अंसभव

इक्कीसवीं सदी में भी बराबरी के हक से वंचित हैं महिलाएं :पुनिया

संवाददाता
@ dainikuttaranchaldeep.com

महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए होना होगा जागरुक

गदरपुर। महिला सशक्तिकरण पर चर्चा जारी है लेकिन इसके वास्तविक मायने कितने लोग समझ पाते हैं यह कहना मुश्किल है। समाज में इसको कितनी मान्यता मिल रही है, यह अनुसंधान करना बेहद कठिन है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। महिलाओं के अधिकारों को लेकर संघर्षरत सामाजिक कार्यकत्री पीहू पूनिया ने पत्रकार विनोद कुमार एवं प्रदीप फुटेला से लंबी बातचीत की। उसके प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं। महिला हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। दुर्भाग्य यह है कि पुरुष प्रधान मानसिकता वाले यह मानने के लिए तैयार नही हैं कि महिलाएं भी उनकी बराबरी करें। सवाल पुरुष और महिलाओं के अलग होने का नहीं है, न ही महिलाओं को कमतर आंकने का, सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर देश की आधी आबादी का यूं ही अनदेखा किया जाएगा, उनका शोषण किया जाएगा, ऐसे में उनके बिना समाज का विकास कैसे संभव है। जब तक देश की आधी आबादी सशक्त नहीं होगी तब तक हम विकास की कल्पना नहीं कर सकते। समय की मांग है और समाज की जरूरत भी कि महिलाओं को भी बराबरी का हक मिले।

हमें चिंतन करना होगा कि महिला सशक्तिकरण का सही अर्थ क्या है? सशक्तिकरण के साथ यह भी जानकारी होनी चाहिए कि हम कहीं सशक्तिकरण के नाम पर अराजकता तो नहीं फैला रहे हैं। कहीं हम समाज में प्रचलित रीति-रिवाज और प्रथाओं का उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं। हम नारी स्वतंत्रता का गलत फायदा तो नहीं उठा रहे। अब समय आ गया है हम इसकी वास्तविक परिभाषा को समझें और सशक्त बने। अपनी निजी स्वतंत्रता और खुद फैसले लेने के लिए महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सशक्तिकरण है। प्रचीन काल से आज तक अपनी सभ्यता, संस्कृति व परम्परा हर तरह से हमारे समाज में पुरुषों को ही प्राथमिकता दी गई। अब सवाल यही है कि ऐसे समाज में नारी का सशक्त होना कितना आसान है और कितना कठिन? कहने को तो बेटी घर की लक्ष्मी होती है लेकिन घर के बाहर हर जगह वह तर्क-कुतर्क और विकृत मानसिक लोगों की शिकार होती है, हिंसा की शिकार होती है, हिंसा की शिकार होती है, लांछित होती है।

एक समय था महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, मुख्यधारा से नही जुड़ने दिया जाता था और न ही कोई रोजगार करने दिया जाता था, उन्हें सिर्फ घर की चारदिवारी में कैद करके रखा जाता था। यह सच है कि अब हालात पहले जैसे नही हैं महिलाएं, शिक्षित होने लगीं हैं, हर क्षेत्र में आगे बढ़ने लगी हैं, लेकिन फिर भी सवाल वहीं की वही है कि क्या महिलाओं का शोषण बन्द हो गया है? क्या महिलाओं पर होने वाली हिंसा रुक गई है? यह वह सवाल हैं जो दशकों से समाज पर प्रश्न चिन्ह लगाये हुए हैं, क्यों? शायद हम इस ओर पूरी इच्छा शक्ति और ईमानदारी से चर्चा और प्रयास नहीं कर रहे। जन्म से पहले कन्या भ्रूण हत्या किया जा रहा है, दहेज के लिए आए दिन महिलाओं की हत्या हो रही है, रेप की घटनाओं के बढ़ते आंकड़े देखे तो मन विचलित होता है। संविधान, सरकार से लेकर सामाजिक संगठन तक में महिला सशक्तिकरण की बात तो होती है लेकिन महिला सशक्त नहीं हो पाई है। अब जागरूकता की परम आवश्यकता है, नारी को खुद को पहचानने की, अपने-आप को जानने की जरूरत है।

समाज का संतुलित विकास नारी के सशक्त होने पर ही सम्भव है। इसलिए महिलाओं को शिक्षा तथा सोच से हर तरह से अपने-आप को सशक्त करने का समय आ गया है। महिलाओं को मानसिक रूप से मजबूत होकर खुद को अपने-आप को प्रस्तुत कर हर जगह शिखर पर स्थापित करना होगा, साथ ही सशक्त होने के लिए पुरुषों की सोच को भी बदलना होगा।